# प्रेम के पनपने का आधार...

आप देखेंगे तो मुख्यतः सात ऐसे कारण हैं जो मनुष्य के मन में प्रेम, प्यार अथवा आकर्षण पैदा करने वाले होते हैं। वैसे तो बहुत कारण हो सकते हैं लेकिन आप भी सोचें कि प्रेम पैदा करने वाले ऐसे कौन से कारण हो सकते हैं। तो आपके मन में क्या आ रहा है? हाँ... यूँ तो... जहाँ प्राप्ति होती है वहाँ मनुष्य का मन चला जाता है। और सोचो, जो सर्वमान्य हो और व्यवहारिक भी। हम आपके इस प्रश्न की उत्सुकता को समाप्त करने के लिए बता ही देते हैं...।

पहला, सम्बन्ध। दूसरा, सौंदर्य। तीसरा, सुखदायक व्यक्ति। चौथा, सहयोगी व सहकारी। पाँचवा, सहानुभूति। छठा, रचना। सातवाँ, गुणवान व्यक्ति। ठीक है ना! मन की उत्सुकता खत्म हो गई! अब हम एक-एक को विस्तृत रूप से समझते हैं।

जहाँ सम्बन्ध हो, वहाँ प्यार अथवा प्रेम होना स्वाभाविक है ही। माता-पुत्र, पति-पत्नी, दोस्त, भाई-भाई, ये सभी सम्बन्ध ही हैं जो प्रेम के विभिन्न प्रकारान्तर अथवा रूपान्तर पर टिके हुए हैं। कहावत भी है, 'अपने और परायों में सदा अंतर होता है, ब्लड इज़ थिकर देन वॉटर।' जिनसे मनुष्य का सम्बन्ध हो, उन्हीं की याद उसे आया करती है और उनके प्रति ही उसका थोड़ा बहुत समर्पण भाव रहता है। अतः यदि यह बात मनुष्य की बुद्धि में स्पष्टतः बैठ जाये कि परमात्मा तो आत्मा के माता-पिता, सखा-बंधु, नहीं-नहीं बल्कि सर्वस्व हैं, तब तो मनुष्य का परमात्मा से सौ गुणा प्यार होगा। पिता-पुत्र में, सखा-सखा में, भाई-बहन में, सजनी और साजन में जो प्यार होता है तथा अन्यान्य सभी सम्बन्धों के प्यार को यदि इकट्ठा किया जाये तो मनुष्य को उससे भी अधिक प्यार परमात्मा से हो जायेगा। क्योंकि सांसारिक लोगों के साथ तो हमारे दैहिक, नश्वर अथवा एकांगी नाते हैं जबकि आत्मा का सच्चा मीत तो एक परमात्मा है।

सम्बन्ध से अतिरिक्त सौंदर्य भी मनुष्य के मन में प्यार पैदा करता है। यह सौंदर्य रूप-रंग का भी हो सकता है, चरित्र का भी और किसी अन्य कला(वाद्य कला, नृत्य कला) से संबंधित भी। परंतु स्थायी एवं सर्व प्रकार का सौंदर्य तो एक परमात्मा ही में है। संसार में जब कोई व्यक्ति सुंदर मालूम होता है, तो मानव का मन उसे पाने, अपनाने या स्वयं ही उसका हो जाने की चेष्टा करता है व उसके रूप पर मुग्ध हो जाता है। इसी प्रकार यदि मनुष्य को यह ज्ञात हो जाये कि संसार के सारे सौंदर्य का सार एक परमात्मा ही में है और उसके रूप को काल, कष्ट, कुभाव एवं काम छूते तक नहीं, तो वे उस 'मनमोहन' के रूप-लावण्य को जानकर उससे प्रीति किये बिना नहीं रह सकेंगे।

खेद की बात है कि मनुष्य सांसारिक सौंदर्य पर लट्टू होकर अपना सर्वस्व लुटा देता है अथवा अपने जीवन को भी भेंट कर देता है। सुखदायक, सहयोगी तथा सहानुभूति वाला जैसे सुंदर व्यक्ति एवं वस्तु प्यारे होते हैं, वैसे ही सुखदायक व्यक्ति, सहयोगी तथा सहकारी के प्रति भी मनुष्य के मन में प्यार पैदा होता है। यदि कोई व्यक्ति आड़े समय में हमारा हाथ बटाये, डूबे हुए को निकाल ले, मरते हुए को बचा ले, किसी की भूख-प्यास मिटा दे, किसी भी प्रकार की सहायता करे अथवा सहानुभूति करे एवं मन का हाल लेकर मदद करे तो उसके प्रति मनुष्य स्वयं को कृतकृत्य मानता है, तथा उस पर अपना जीवन भी न्यौछावर करने के लिए तैयार हो जाता है। ठीक इसी प्रकार यदि मनुष्य को ज्ञात हो कि कलियुग के अंत में जब सभी की जीवन-नाव, विषय-नाव, विषय-विकारों में डूब रही होती है, जब सबका आत्मन दुःख-दरिद्रता अथवा विकार-तृष्णा से पीड़ित होकर मर-सा रहा होता है, तब परमपिता परमात्मा स्वयं अवतरित होकर जीवन-नैया को उबारते और योग तथा सहयोग द्वारा मुक्ति एवं जीवनमुक्ति देते हैं। तो ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं हो सकता जिसकी प्रीति प्रभु से न जुटे।

## रचना और गुणवान के साथ प्रीति

हम उपरोक्त पाँच कारणों के अतिरिक्त बता आयें हैं लेकिन अब छठा कारण होता है रचता और रचना का सम्बन्ध। रचना का अपने रचयिता से प्यार होता ही है। यही तो कारण है कि पुत्र का अपने माता-पिता से, पत्नी का पति से तथा मनुष्य को अपने मकान, सामान तथा अन्य कृतियों एवं रचनाओं से भी प्यार होता है। ठीक इसी प्रकार यदि मनुष्य की वृत्ति का दिशा-निर्देशन करते हुए कलियुगी बच्चे की बजाय सतयुगी श्रीकृष्ण के समान बच्चा पाने की चेष्टा करे अथवा सतयुग में नारायण जैसा पति पाने का मनोरथ तो इस कलियुगी, अपवित्र गृहस्थी से उसका मोह नष्ट हो जायेगा और उसकी प्रीति परमात्मा से जुट जायेगी, क्योंकि श्रीकृष्ण के समान सम्बन्धी तो तभी मिल सकते हैं जब मनुष्य परमात्मा से योगयुक्त होकर मनुष्य से देवता बने।

इसके अलावा हम देखते हैं कि मनुष्य का मन स्वतः ही गुणवान व्यक्तियों की ओर आकर्षित होता है। जिसका स्वभाव सरल एवं मधुर हो, जो नम्रचित्त एवं सदा हर्षितमुख हो, जो संतोषी एवं स्नेही हो, उससे हमारा भी स्नेह होता है। इसके विपरीत जो असहिष्णु एवं आलसी हो या निंदा एवं चुगली करने वाला हो, उससे हमारा भी प्यार समाप्त होता है। अतः मनुष्य यदि इस बात को ध्यान में रखे कि परमात्मा तो सर्व गुणों का असीम भंडार है, तो उससे मन की प्रीति जुड़ना स्वाभाविक है। आप भी और कारण सोच कर अपनी बुद्धि को इस विनाशी संसार से व सम्बन्ध से निकाल कर परमात्म प्रेम के सम्बन्ध को अपनाकर अपने जीवन को धन्य-धन्य बना सकते हैं।

अम्बिकापुर-चोपड़ापारा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के द्वितीय स्मृति दिवस को वैश्विक आध्यात्मिक जागृति दिवस के रूप में मनया गया। इस मौके पर टी.एस. सिंहदेव,कैबिनेट मंत्री,स्वास्थ्य एवं पंचायत विभाग,छ.ग. शासन, डॉ. प्रीतम राम सिंह,विधायक,लुण्ड्रा कैबिनेट मंत्री मेडिकल बोर्ड अध्यक्ष,छ.ग. शासन, डॉ. पी.एस. सिंह सिसोदिया,संयुक्त संचालक,सरगुजा संभाग स्वास्थ्य विभाग, राकेश गुप्ता,जिला कांग्रेस अध्यक्ष, शैलेष सिंगदेव,किसान कांग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष एवं जनपद उपाध्यक्ष सीतापुर, सुरेन्द्र दुबे,कार्य पालन अभियंता,जल संसाधन सम्भाग बैकुण्ठपुर, सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

नगरोटा बगवां-हि.प्र.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में क्षेत्र के विधायक अरुण मेहरा, उनकी धर्मपत्नी सोनिया मेहरा तथा अन्य अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शीला बहन।

धमतरी-छ.ग.। महावीर इंटर कॉन्टिनेंटल सर्विस ऑर्गनाइज़ेशन पद्मावती महिला शाखा धमतरी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ब्र.कु. सरिता दीदी को सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए मोमेंटो, शॉल एवं श्रीफल द्वारा सम्मानित किया गया।

झोझूकलां-कादमा(हरियाणा)। हरियाणा योग आयोग एवं आयुष विभाग द्वारा कर्टेन राइज़र प्रोग्राम के अंतर्गत योगा विषय पर आयोजित जिला स्तरीय दो दिवसीय विचार गोष्ठी में ब्र.कु. वसुधा बहन को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. वसुधा बहन एवं ब्र.कु. ज्योति बहन को स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अतिरिक्त जिला उपायुक्त डॉ. मनीष नागपाल। कार्यक्रम में हरियाणा योग आयोग के जिला संयोजक विकास राणा, आयुष विभाग के जिला अधिकारी डॉ. राकेश वशिष्ठ, जिला स्पोर्ट्स एवं योगा एसोसिएशन के अध्यक्ष बिशन सिंह आर्य, सचिव सुरेन्द्र सिंह आर्य के साथ-साथ योग एवं आयुष विभाग से जुड़े हुए सैकड़ों भाई-बहनें उपस्थित रहे।

गुरुग्राम-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर वाप्कोस एवं एनपीसीसी के वुमेन इम्लॉय द्वारा संयुक्त तत्वाधान में वाप्कोस ऑफिस गुरुग्राम में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'महिलाएं : नए भारत की ध्वजवाहक' विषय पर मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. पीयूष भाई, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. गिरिजा बहन आदि द्वारा सभी का मार्गदर्शन किया गया। कार्यक्रम में सभी वुमेन इम्लॉइज़ को विभिन्न क्षेत्रों में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस मौके पर आर.के. अग्रवाल,सीएमडी,वाप्कोस एंड एनपीसीसी, डायरेक्टर्स, चीफ एक्ज़ीक्युटिव डायरेक्टर्स तथा अन्य सीनियर ऑफिसर्स उपस्थित रहे।

समस्तीपुर-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के द्वितीय पुण्य स्मृति दिवस पर अपनी भावनायें व्यक्त करते हुए डीआरएम आलोक अग्रवाल। मंचासीन हैं ब्र.कु. सविता बहन, एसडीओ रविंद्र कुमार दिवाकर व ब्र.कु. कृष्ण भाई। कार्यक्रम में ऑनलाइन माध्यम से बिहार राज्य उत्पादकता परिषद् के अध्यक्ष डी.के. श्रीवास्तव ने भी अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

मरोली-नवसारी(गुज.)। आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मुकेश बहन, हेमलता बहन,तालुका पंचायत सभ्य, अमरीश मेहता,दूध मंडली प्रमुख, भरत मेहता,पंचायत सभ्य, दिनेश शाह,व्यापारी तथा अन्य।

डभरा-रायगढ़(छ.ग.)। परमात्मा शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन झाँकी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए वरिष्ठ भाजपा नेता बहन संयोगिता युद्धवीर सिंह जूदेव, ब्र.कु. मंजू बहन, ब्र.कु. राधिका बहन, ब्र.कु. बेबी बहन तथा अन्य।

आगरा म्यूज़ियम-उ.प्र.। ग्राम नगला लालजीत स्थित विमला पार्क में विश्व महिला दिवस के अवसर पर आयोजित भव्य एवं मनोहारी कार्यक्रम में आगरा की महापौर एवं राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व सदस्य श्रीमति बेबी रानी मौर्य, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. माला बहन, ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. सावित्री बहन, महावीर सिंह, विजेंद्र भाई तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

चित्तौड़गढ़-राज.। दादी जानकी के पुण्य स्मृति दिवस पर दादी को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के पश्चात् उपस्थित हैं मुम्बई आर्यन फिल्म प्रोडक्शन की टीम आर्यन माहेश्वरी, अर्जुन खटवानी, अमित चेचाणी, रेलवे के मनोज गुप्ता, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. अनीता बहन तथा अन्य।